❖लंगवर्म का नियमित टीका लगवायें।

(8) काक्सीडियोसिस :– यह 4–6 माह की बकरियों में पाई जाने वाली घातक बीमारी है। कोक्सीडियल परजीवी पशु की आँत की दीवारों में कालोनी (समूह) के रूप में पाये जाते हैं। कुछ समय बाद कालोनी फटकर आँत की दीवारों पर घाव पैदाकर देती है जिससे खून रिसने लगता है। स्वस्थ पशु में यह रोग इस परजीवी द्वारा प्रदूशित चारा खाने से फैलता है। रोगी पशु लगातार अपने मल के साथ परजीवी की सिस्ट विसर्जित करता है जो पीने के पानी एवं चारे को प्रदूशित करती रहती है।
लक्षण :–इस बीमारी के लक्षण संक्रमण के स्तर पर निर्भर करते हैं। प्रभावित पशु में दुर्गन्ध युक्त दस्त पीले, हरे रंग के कभी–कभी रक्त के साथ पाये जाते हैं। रोगी पशु में पेट दर्द, रक्ताल्पता तथा चारा न खाने के लक्षण पाये जाते हैं। रोगी पशु काफी कमजोर हो जाता है। यद्यपि बड़े पशु भी इस रोग से प्रभावित होते हैं पर छोटे बच्चों के लिये यह रोग अधिक घातक है।
निदान :– रोगी पशु के मल की जाँच करने पर रोग की पहचान की जा सकती है।
उपचार :–❖एम्प्रोलियम 50–100 मि० ली० ग्रा०/कि० ग्रा० शरीर भार पांच दिन तक पिलायें।

(9) लाउजीनेस :– यह बीमारी बकरियों में जाड़ों में जुओं के संक्रमण के कारण होती है। जूँ एक प्रकार का बाहय परजीवी है जो पोशक पशु का रक्त शोशण करती है। जनवरी व फरवरी माह में प्रभावित पशु की अवस्था इतनी गम्भीर हो जाती है कि त्वचा का एक छोटा सा भाग खुरचने पर भारी संख्या में परजीवी एवं उसके अन्डे पाये जाते हैं। यद्यपि इस रोग से प्रभावित पशु की मृत्यु नहीं होती है फिर भी जुओं के संक्रमण से बकरी पालन में काफी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। इनके कारण दुग्ध एवं माँस उत्पादन में काफी कमी व चमड़े की गुणवत्ता नश्ट हो जाती है। यह परजीवी बकरियों की चमड़ी में बालों पर चिपके रहते हैं और अपने अन्डे बालों के आधार पर देते हैं जो कि सफेद भूरे रंग के चमकीले होते हैं। परजीवी स्वस्थ पशुओं में रोगी पशु सम्पर्क के कारण फैलता है। विशेशकर जाड़ों में ठंड से बचने या गर्मी प्राप्त करने के उद्देश्य से जब पशु एक दूसरे के निकट आते हैं तो उनमें संक्रमण हो जाता है। परजीवी पोशक पशु से अलग नहीं जीवित रह सकती।
लक्षण :– स्वस्थ बकरियों में जूओं से कोई विशेश हानि नहीं है। परन्तु यदि पशु बीमार एवं कमजोर है तो जूओं का संक्रमण गम्भीर हानि पहुँचाता है। प्रभावित पशु में लगातार खुजली होती है। कभी–कभी पशु शरीर को पेड़/दीवार से रगड़ता है और चमड़ी में घाव कर लेता है। बाल टूटने से शरीर पर छोटे छोटे धब्बे हो जाते हैं। संक्रमण अधिक होने से पशु में रक्ताल्पता हो जाती है, वह चारा खाना छोड़ देता है तथा कमजोर होता जाता है।
उपचार :–पशुओं को समय–समय पर मैलाथियान नामक कीटनाशक के 0.5 से 0.8 प्रतिशत (एक लीटर पानी में 58 मि०ली० दवा) घोल से नहलाने से ठीक हो जाते हैं।
रोकथाम :– यह रोग सम्पर्क द्वारा फैलता है, अतः कम जगह में ज्यादा पशु नहीं रखे जाने चाहिए। बकरियों के बाल काटकर छोटे कर देने से भी जूओं के प्रकोप में कमी आ जाती है।

(10) किलनी प्रकोप या टिक्स :– किलनी या टिक्स मुख्यता वर्शा ऋतु में बकरियों को प्रभावित करने वाला परजीवी रोग है। यह बकरियों की चमड़ी पर चिपक कर खून चूसते हैं तथा चमड़ी में घाव बना देते हैं। पशु को खुजली होती है और खून की कमी हो जाती है। यह परजीवी कुछ अन्य बीमारियों को भी बकरियों में फैला सकते हैं।
लक्षण :– यदि रोग का प्रकोप अधिक है तो चमड़े की गुणवत्ता पर भारी प्रभाव पड़ता है। परजीवी काफी मात्रा में रक्त चूसता है, अतः रोगी पशु में रक्त की कमी हो सकती है। रोगी पशु धीरे–धीरे कमजोर हो जाता है। लगातार खुजली के कारण पशु ठीक से भोजन ग्रहण नहीं कर पाता और उसका वजन कम हो जाता है। दूध और माँस का उत्पादन भी कम हो जाता है। यह परजीवी अन्य कुछ रोगों को फैलाने में संवाहक का काम करते हैं। कभी–कभी यह परजीवी कुछ विशैले पदार्थ भी रक्त में छोड़ते हैं जिससे पशु के पिछले पैरों में लकवा मार जाता है।
उपचार :– पशुओं को मैलाथियान (0.5 प्रतिशत) के घोल में नहलाने से इस रोग से छुटकारा दिलाया जा सकता है। पशु को 5–10 सेकिन्ड तक डिपिंग टैंक में रखा जाना चाहिए।
रोकथाम :– प्रभावित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से दूर रखना चाहिये।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- संजय कुमार भारती, अवनीश कुमार गौतम एवं मनोज कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक, पशु शरीर रचना विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय परिसर पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

PE: 8051910781/ March 2022

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार पुस्तिका संख्या:- DEE/2022-37

बकरियों में परजीवी रोग

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

बकरियों में परजीवी रोग

बकरियों में परजीवी रोगों का पाया जाना एक सामान्य बात है। इनके द्वारा बकरियों के दुग्ध उत्पादन में कमी, मौंस की गुणवत्ता का ह्रास होने के साथ – साथ उनके स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है। यद्यपि ये बीमारियाँ हमेशा घातक नहीं होती हैं फिर भी समय रहते रोकथाम के उपाय न किए जाने पर पशुओं की उत्पादन क्षमता में अपूर्णनीय क्षति पहुचाती है। बकरियों के मुख्य परजीवी रोग निम्न प्रकार हैं :–

(1) पारऐम्फीस्टोमिएसिस :– यह रोग मुख्यतः जाड़े की ऋतु में बकरियों की आंत में पाये जाने वाले अपरिपक्व परजीवियों के कारण होता ळै पशुओं में इस रोग की शुरूआत परजीवी लारवा के कारण होती है जो प्रदूशित पानी एवं चरागाह में पाये जाते हैं। इन लारवा का विकास तालाबों व झीलों में पाये जाने वाले घोंघे (स्नेल) के शरीर में होता है। बकरियों द्वारा ग्रहण करने के उपरान्त यह लारवा अपरिपक्व परजीवी के रूप में आतों की दीवार को भारी क्षति पहुँचाते हैं।

लक्षण :– इस रोग से बकरियों में काफी बदबूदार दस्त होते हैं। रोगी पशु के शरीर का पानी दस्त के रूप में बाहर निकल जाने से वह काफी प्यास का अनुभव करता है तथा ज्याद मात्रा में पानी पीता हैं एवं निचले जबड़े के नीचे सूजन आ जाती है। इसे आसानी से दूर से देखा जा सकता है। समुचित इलाज न होने पर प्रायः बकरी मर जाती हैं।

रोकथाम :–
- ❖प्रदूशित तालाबों के किनारे बकरियों को नहीं चराना चाहिए तथा उनको स्वच्छ जल पिलाना चाहिये।
- ❖ऐसे तालाबों, जिनमें घोंघे हों, को कंटीले तारों से घेर देना चाहिए ताकि पशु वहाँ तक न पहुँच सकें।
- ❖वर्षा ऋतु से पहले एवं बाद में पेट के कीड़ों को मारने वाली दवाऐं पिलानी चाहिए।

उपचार :– आक्सीक्लोजानाइड एवं निकलासामाइड काफी प्रभावकारी औशधियाँ हैं।

(2) फैसिओलिऐसिस :– बकरियों में पाया जाने वाले इस रोग के परजीवी का आकार एक चपटी पत्ती के समान होता है जो यकृत की नलिकाओं में पाया जाता है। स्वस्थ पशु में यह रोग प्रदूशित पानी एवं उसके चारों ओद स्थित चरागाहों में चरने से होता है। इस बीमारी को फैलाने में घोंघे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि लारवा (परजीवी) का विकास इन्हीं में होता है।

लक्षण :– यदि पशु द्वारा अधिक संख्या में लारवा ग्रहण कर लिए जाये तो यह रोग काफी उग्ररूप धारण कर लेता है और बकरियाँ सुस्त होकर चारा खाना छोड़ देती हैं तथा पेट में दर्द की शिकायत दर्शाती हैं। पशु का पेट फूल जाता है और छूने से दर्द होता है। इसके साथ–साथ चलने में भी तकलीफ होती है। परजीवी का संक्रमण कम होने से रोग काफी लम्बे समय तक चलता है। बकरियों में दस्त या कभी–कभी कब्ज की शिकायत भी पाई जाती है तथा वे कमजोर हो जाती हैं।

निदान :– रोग ग्रसित पशुओं के गोबर मल की जाँच करने पर उसमें परजीवी के अन्डे पाये जाते हैं।

उपचार :– आक्सीक्लाजोनाइड 10 मि० ग्रा० प्रति किलोग्राम वजन की दर से प्रभावकारी औशधि हैं। हेक्साकलोरोथेन 20 से 30 ग्राम प्रति पशु की दर से लाभकारी सिद्ध होती हैं।

रोकथाम :–
- ❖पशुओं को स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए।
- ❖घोंघे युक्त तालाबों के आस–पास चराई न करायें तथा नियमित रूप से पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलायें।

(3) सिस्टोसोमिऐसिस :– बकरियों में यह रोग आँत की रक्त नलिकाओं में पाये जाने वाले परजीवी के कारण होता है। परजीवी के अन्डे पशु की आँत के रास्ते गुजरते समय आँत की दीवार को भारी क्षति पहुँचाते हैं। परजीवी रक्त नलिकाओं में रहकर काफी मात्रा में पशु रक्त चूसते हैं। पशुओं में परजीवी त्वचा के माध्यम से शरीर में प्रवेश करते हैं तथा आँत की रक्त नलिकाओं में पहुँचकर वयस्क अवस्था प्राप्त करते हैं।

लक्षण :– यह परजीवी रक्त चूसने वाला है। अतः इसके कारण पशुओं में रक्ताल्पता हो जाती है। इसके अन्डे आँतो की दीवार एंव यकृत में जलन पैदा करती हैं जिससे वहाँ पर गाँठें बन जाती हैं। आँतों में अल्सर्स (घाव) भी हो सकते हैं। प्रभावित पशु चारा खाना छोड़कर दस्त करने लगता है तथा दिन प्रतिदिन कमजोर होता जाता है। शरीर की श्लेष्मा झिल्लियाँ पीली पड़ जाती है। प्रवास के दौरान लारवा यकृत में भारी क्षति पहुँचाते हैं।

निदान :– लक्षणों के आधार पर रोग का पता लगाया जा सकता है। मल जांच परीक्षण के द्वारा रोग का निदान सम्भव है।

उपचार :– हाईकेन्थेस 6 मि० ग्रा० प्रति कि० ग्रा० वनज की दर से काफी प्रभावकारी औशधि है। यह इन्जेकशन के द्वारा दी जाती है। इसके अतिरिक्त टारटार ऐमेटिक एवं ऐन्टीमोसान भी काफी प्रभावी दवाऐं हैं।

रोकथाम :–
- ❖बकरियों को स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए।
- ❖पशुओं के मल/गोबर को अच्छी तरह सड़ाना चाहिए। इससे परजीवी लारवा की मृत्यु हो जाती हैं।
- ❖घोंघे युक्त तालाबों/झीलों को चारों ओर से घेर देना चाहिए ताकि पशु वहाँ तक नां पहुँच सकें।

(4) टीनिऐसिस :– बकरियों में यह रोग आँत में पाये जाने परजीवी के कारण होता है। यह परजीवी फीते की तरह है तथा इसकी लम्बाई 2–4 मीटर तक हो जाती है। कृमि अपने अगले हिस्से के द्वारा आँत की दीवार में घुसा रहता है तथा इसका शेश भाग आँत में लटका रहता है।

लक्षण :– यह रोग प्रौढ़ पशुओं में अधिक हानिकारक नहीं है परन्तु 6 माह से कम आयु के मेमनों में इसका अधिक प्रभाव देखा गया है। कभी–कभी संक्रमण इतना भयंकर हो जाता है कि पशु की पूरी छोटी आँत इनसे भर जाती है परिणामस्वरूप पशु को कब्ज हो जाता है तथा छोटे–छोटे बच्चों का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जाता है तथा इनकी वृद्धि रुक जाती हैं।

निदान :– परजीवी के छोटे टुकड़े पके चावल के भाँति पशु के मल/गोबर में पाये जाते हैं इनकी जाँच द्वारा परजीवी की उपस्थिति का पता लगाया जा सकता हैं।

उपचार :–(1) लेड आरसीनेट : वयस्क बकरी में 1 ग्राम/पशु तथा मेमने में 0.5 ग्राम/पशु
(2) निकलोसामाईड : 75 मि० ग्रा०/कि० ग्रा० शरीर भार की दर से तथा अधिकतम खुराक – 1 ग्रा०

रोकथाम :– पशु को जमीन पर चारा डाल कर न खिलाऐं। उसे समय–समय पर कृमि नाशक दवा दें।

(5)
यह रोग मुख्य रूप से भेड़ों में पाया जाता है परन्तु कभी–कभी बकरियाँ भी इससे प्रभावित होती हैं। यह बीमारी टीनिया मल्टीसेप नामक एक परजीवी के लारवा के द्वारा होती है। यह लारवा एक पानी की थैली की भाँती मस्तिश्क में विकसित होता है। बकरियों में यह रोग उनके द्वारा कुत्ते के मल से संक्रमित भोजन खाने से होता है, क्योंकि यह परजीवी प्रौढ़ावस्था में कुत्तों में पाया जाता है। प्रभावित कुत्तों के मल में परजीवी के अन्डे पाये जाते हैं जो बकरियों के चारे को प्रदूषित करते हैं।

लक्षण :– रोग के लक्षण इस बात पर निर्भर करते हैं कि थैली/सिस्ट मस्तिश्क के किस भाग में स्थित है। साधारणतः बकरी अपने सिर को एक ओर झुका कर रखती है तथा गोल चक्कर लगाती है। कभी सिर को ऊंचा कर सामने की ओर चलती है जब तक कि किसी वस्तु से टकरा न जाये। कभी–कभी थैली इतनी बड़ी होती है कि इसका दबाव पड़ने से बकरी लड़खड़ा कर चलती है और पिछले पैरों में लकवा मार जाता है। बकरी आँख से अन्धी भी हो सकती है तथा शारीरिक सन्तुलन समाप्त हो जाता है। पशु दाना–चारा खाना छोड़ देता है तथा कमजोर होकर मर जाता है।

निदान :– लक्षणों द्वारा तथा पशु की खोपड़ी की हड्डी थैली की उपस्थिति के कारण नरम पड़ जाती हैं।

उपचार :– सिर्फ शल्य क्रिया द्वारा सम्भव है।

रोकथाम :– पशु के मृत शरीर का उचित निस्तारण करे जिससे इसे कुत्ते न खा सकें। कुत्तों को नियमित कृमिनाशक दवा पिलायें।

(6) पैरासिटिक गैस्ट्राईटिस :– यह बकरियों में पायी जाने वाली घातक बीमारी है जो पेट व आँत में पाये जाने वाले परजीवियों के कारण होती है। परजीवी रक्त शोशण द्वारा या आँत की दीवारों में घाव पैदाकर पशु को हानि पहुँचाते हैं। आँतों में ज्यादा घाव हो जाने पर प ुओं द्वारा भोजन तत्वों को शोशण नहीं हो पाता है जिसके कारण उनका बजन, कम हो जाता है। बकरियों में यह रोग परजीवी लारवा द्वारा संक्रमित भोजन ग्रहण करने से होता है। यह लारवा पशु के पेट व आँतों में जाकर प्रौढ़ावस्था तक विकसित होकर बने रहते हैं। इन कृमियों की उपस्थिति शरीर में अति हानिकारक ळै

लक्षण :– यह कृमि रक्त चूसते हैं, अतः प्रभावित पशु में रक्ताल्पता हो जाती है। कभी–कभी यह कभी इतनी अधिक हो जाती है कि पशु किसी रोग के लक्षण प्रकट किये बिना मर जाता है। यदि बीमारी लम्बे समय तक चलती है तो निचले जबड़े के नीचे सूजन आ जाती है। रोगी पशु कमजोर हो जाता है। त्वचा पीली पड़ जाती है तथा बाल गिरने लगते हैं। कभी–कभी पशु में दस्त या कब्ज भी हो सकते हैं।

निदान :– रोग ग्रसित पशु की मल जाँच करके रोग का पता लगाया जा सकता है।

रोकथाम :–
- ❖पशु को चारा व दाना के साथ नियमित रूप से खनिज लवण भी देना चाहिए।
- ❖आवश्यकता से अधिक चारा नहीं खिलाना चाहिए।
- ❖रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- ❖बच्चे रोग के अतिग्राही हैं, अतः यथासम्भव बच्चों को बड़ी बकरियों से अलग रखें।
- ❖बकरियों के चराई एवं रहने के क्षेत्र में नमी नहीं होनी चाहिए।
- ❖चारे व दाने को जमीन से ऊपर चराई में खिलाना चाहिए।
- ❖नियमित रूप से कृमिनाशक औशधियों का प्रयोग करें।

(7) परजीवी निमोनिया :– यह रोग श्वास नली में पाये जाने वाले परजीवी के कारण होता है। परजीवी श्वास नली की भीतरी दीवार व गुहा को लगातार हानि पहुँचाता रहता है, जिससे पशु को लगातार खाँसी उठती हैं। इस रोग से पीड़ीत पशु अपनी मल में पाये जाने वाले लारवा से चरागाह को संक्रमित करता रहता है। स्वस्थ पशु चराई के समय उन लारवा को ग्रहण कर लेता है और रोग ग्रसित हो जाता हैं। घोंघे इस रोग में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

लक्षण :–मुख्यतः बकरियों के बच्चे इस रोग से प्रभावित होते हैं लेकिन यह रोग सभी आयु वर्ग में हो सकता है तथा लम्बे समय तक चलता है। पशु को खाँसी आती है और नथुनों से म्युकस जैसा गाढ़ा स्त्राव आता रहता है। श्वांस लेने में कठिनाई/रुकावट होती है तथा श्वांस तेजी से चलती है। कभी–कभी बुखार भी हो सकता है। पशु चारा खाना छोड़ देता है तथा कमजोर होता जाता है।

निदान :– लक्षणों के आधार पर तथा मल परीक्षण द्वारा

उपचार :– ऐल्बेन्डाजोल एक प्रभावी दवा है। इसे 7.5 – 10 मि० ग्रा/कि० ग्रा भार की दर से पिलायें।

रोकथाम :–
- ❖रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- ❖पशुओं का चराई क्षेत्र बदल दें अथवा बाड़े में रखकर चारा खिलाऐं।